श्रीः ।

रत्नपरीक्षा ।

भाषा ।

श्रीगुरुदासरचित ।

नागरी प्रचारिणी काशी
NAGARI BENARES
५५० G. 09

यह पुस्तक रा० सा० गणेश सीतारामशास्त्री गोळवलकर इनसे हमको प्राप्त हुई

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई,

स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५२ शके १८१८

रजिस्टरी हक यन्त्राध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

॥ श्रीः ॥

श्रीगणेशायनमः ।

अथ रत्नपरीक्षाप्रारंभः ।

दोहा ॥

मनसावाचाकर्मना, यथाशक्तिभजुतोहिं ॥
मथिसागररत्नहिंकहौं, देचंडीमतिमोहिं ॥ १ ॥
सत्रहसैपचपनभनौं, अमृतआइजिदंभु ॥ चौथिश
नीचरपौषवदि, पुष्यकरौंआरंभु ॥ २ ॥ एकस-
मयसबऋषिनामिलि, ऋषिअगस्त्यपैआइ ॥ हा-
थजोरिपूछीयहै, करिवंदनमनभाइ ॥ ३ ॥ रत्न
परीक्षाकरिकृपा, कहिजैसुमतिसुजान ॥ जातेस
बहीरतनको, जानैनरपरमान ॥ ४ ॥ ॥ अग
स्त्यउवाच॥उपजखानिअरुवरनरँग, जातिदोषगुण
मोल ॥ अरुदलालचातुर्यता, क्रयविक्रयविधि
तोल ॥ ५ ॥ इहिविधिकह्योप्रकाशकै, रहैनहीं
नेषेद ॥ सुरमुनिमानसआदिदै, समझिपरैसब

भेद ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ वज्रदेहबलदैयत भयौ । सबदेवानिपरजाहि न हयौ ॥ तीनिलोकहित उपजीइच्छा । वाकोतनुजामाग्योभिच्छा ॥७॥ तबहिंदेवदानवपैगए । करिप्रणामतनुमाँगतभए ॥ तबदैयततनुदेवनदयौ ॥ हाथजोरिकैसन्मुखभयौ ॥ ८ ॥ जससंकल्प्योतनुअसुरेशा ॥ शिरमेंमाऱ्योवज्रसुरेशा ॥९॥ दोहा ॥ वज्रहने तेहाड़जे, कढ़ेअसुरकेइष्ट ॥ वज्रनामदेवानिकहे, सबरतननिमेंश्रेष्ठ ॥ १० ॥ विप्रवरनाशिरतेभए, भुजतेक्षत्रीवर्ण ॥ नाभिकमलतेवैसपुनि, शूद्रजुउपजेचर्ण ॥ ११ ॥ किन्नरराक्षसयक्षसुर, असुरनवज्रउठाइ ॥ स्वर्णशैलकीशिखरपै, कियेप्रकाशतजाइ ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ वज्रशेषजेभूपरगिरे ॥ आठखांनिलैचहुँदिशिकरे ॥ युगयुगपीछेप्रगटैहोई ॥ सतयुगआहियथाक्रमसोई ॥१३॥ छप्पय ॥ भनिकोशलकालिंगदेशसतयुगाहिपूर्वदिशि ॥ पुनिहेमजमातंगदेशत्रेताउत्तर दिशि ॥ बहारिपिट्ठमो

डुदेशद्वापरपश्चिमदिशि ॥ अबवैनुजसुरारदेशक
लियुगदक्षिणदिशि॥ युगअर्धवृद्धिवहुविधिबढै, उ
त्तरउतरैसाहियां॥ अबइहिप्रकारइहिदीपकी सुअष्ट
खानिमुनिजानियां ॥ १४ ॥ दोहा ॥ खानैजंबूद्वी
पकी,युगयुगप्रगटतिजान॥औरद्वीपखानेसदा, एक
रूप पहिचान ॥ १५ ॥ चारिवर्णजेवज्रके,विप्रादि
कजहोत ॥ न्यारेन्यारेकारिकहौं,जातिसुलक्षणगोत
॥ १६ ॥ छप्पय ॥ फटिकशंखशशिशुक्रतेजस
मसेतुविप्रगुनि ॥ कछुकापिंगआरक्तछांहक्षत्री
विचारिपुनि ॥ वैश्यश्वेतमिलिपीतहोतघृतबरणरु
चिरआति ॥ हरितश्याममिलिहोइशूद्रद्युतितरुत
मालप्रति ॥ उतपत्तिजातिलक्षनवरणि कहेसुम
तिअतिसर्वनल ॥ अबपाहिरेकेसुनहुमुनि सुवर्ण
वर्णके पुण्यफल ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ चहूंवेदकोभे
दनिकरता । सबयज्ञनिकेफलकोधरता ॥ सातजु
जन्म विप्रओतरै । विप्रवज्रजोधारनकरै ॥१८॥
क्षत्रीहीरा पहिरैकोई । शूरौअरुतेजस्वीहोई ॥

विक्रमबाहुबलानिअधिकाई ॥ देखिदूरितेशत्रुदुराई ॥ १९ ॥ सकलकलानिचतुरसबकहै । भाग्यवंत बहुसंपतिलहै ॥ सबसुखसहितयशीअतिहोई । वैश्यबज्रपहिरैनरसोई ॥ २० ॥ अपनेहाथनिधन उपजावै ॥ अन्न धन्न घर विविधबढावै ॥ साधुसु परउपकारीहोई ॥ शूद्रवज्रपहिरैनरकोई ॥ २१ ॥ सर्वअगिनिअरिव्याधिजुहोई । औरअकालमृत्युपु निसोइ॥ताकहँदेखिदूरितेभगै । चारिवर्णजिहितनु जगमगै ॥ २२ ॥ ॥ दोहा ॥ पांचदोषगुणपां चहैं,छायाहैविधिचारि ॥ तीनिलोलहैंवज्रकी,बारह मोलविचारि ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ मलअ रुविंदुजवाअरुरेख । पांचौंकाकपांउअवरेख ॥ एसबअपनेअपनेभाउ । फलतशुभाशुभअंगसुभा उ ॥ २४ ॥ धाराकौंनेभीतरहोइ ॥ तीनिठौर जानौंमलसोइ ॥ विजयसवैया ॥ जोकहुँ धारमँझारमलीनतौजीवडढारैतैंभयउपजावै ॥ म ध्याहियेमलदोषपरैबहुधारनहारेकोआगिजरावै ॥

जोकहूंपर्वतकोनेपरैमलताकीकछूकहिवेकोनआवै
जोपहिरैतिहिकेघरवज्रसुरत्नअनेकअनेकतुलावे ॥
॥ २५ ॥ इतितीनिप्रकारमलदोष ॥

अथ विंददोषलक्षण ॥

दोहा ॥ आवर्तवर्तिकारक्तपुलि, औरसु यवअनु
सार ॥ करतशुभाशुभफलनिको, विंदसुचा
रिप्रकार ॥ २६ ॥ छप्पय ॥ धराहिविंदआ
वर्तआवलक्ष्मीबिढ़ावहि ॥ अरुजुवर्तिकाविंदुध
रतअतिभयउपजावहि ॥ रक्तविंदुजानिधरोपुत्र
तियनाशकरावै ॥ यवआकृतिह्वैविंदुदेशतत्क्ष
णहिछुड़ावै ॥ लखिविंदचतुर्विधिपर्वतेत्रिविधदो
षगुणएकहुव ॥ पहिरहुप्रवीणगुणवाननृपरत्नव
ज्रसुखदानिभुव ॥ २७ ॥ इतिविंद ॥

अथ यवदोष ॥

दोहा ॥ रातोपीरोश्वेतपुनि, यवकेतीनिविधान ॥

चौपाई ॥ रातोयवहीरामैहोइ।हाथीघोड़ेनाशैसोइ॥ पीरेयवकोपहिरैसोइ । वंशविनाशतासुकोहोइ२८। आवअन्नधनलक्ष्मीकरै । श्वेतवर्णयवजामेंखरै ॥

इति यवदोष ॥

अथ रेखादोषलक्षणम् ॥

दोहा ॥ अपसाविसाविअरुऊर्ध्वपुनि, दीक्षाविद्धि निहारि॥न्यारेन्यारेलक्षण न रेखाचारिविचारि२९। चौपाई ॥ सबरेखाहीरा मैं कढ़ै । पहिरैतेआयुबलबढ़ै ॥ जोअपसव्यवज्रमेंरेख । वाकेपहिरेसुखन विशेष ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वरेखमृत्युःकोकरै । ऐसेको अनपहिरेसरै ॥ दिक्ष्याविद्धिकहावैसोइ । जोमूसरकीआकृतिहोइ ॥ जोवहपरैवज्रमेंआनि । वाकेपहिरेसुखकीहानि ॥ ३१ ॥ इतिरेषादोष ॥

अथ काकपददोष ॥

चौपाई ॥षट्कोनेलघुतीक्षणधार। अष्टांगीउज्ज्वल

निरधार ॥ ऐसेमांझकाकपदपरै। पहिरतमृत्युत तक्षणकरै ॥ ३२ ॥ इतिकाकपद ॥

अथदोदोषतेऔरभीसमझना ॥

दोहा ॥ जौकहुंकाहूवज्रमें, रेखाअरुणअपार ॥ ताकोमूरतिमृत्युकी, जानोबुद्धिउदार ॥ जो रवरनतेवाहिरो, भगनुजुलक्षणहीन ॥ जोनकछू फलदैसकै,भलोबुरोपरवीन ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ कारेछिटकारेखाअंक। हाथछियेतेलगैकलंक ॥ नारीपुरुषनपुंसकगनो ॥ तीनिभेदहीराकेसुनो ॥ ३४ ॥ बसंतातिलक ॥ अष्टांगखूटषट्तीक्षणधा रसोहै। अत्यंततेजवरषाधननागमोहै ॥ सोवज्र जानिनुररूपनरेशधारी । जाकेप्रतापअवनीरस भोगकारी ॥३५॥ जोगोलरूपचपटोत्रियवज्रजानो हैकुंठकोनवटुरोपुनिपुंसमानो ॥३६॥ चौपाई ॥जो जैसकोतैसोधरै। तौरसवीर्यवृद्धिकोकरै ॥ जोकहुँ वर्णव्यतिक्रमधरै। तौरसवीरजनाशनकरै ॥३७॥

दोहा ॥ प्रथमजुवालागर्भिणी, सोनहिंगर्भधराइ ॥
गर्भवज्रसंसर्गते, पेटहिमाझविलाइ ॥ ३८ ॥

अथ पांच गुण ।

दोहा ॥ आठपहललघुखूंटषट, उज्ज्वलपैनीधार ॥
देवाभूषणजानिवी, पंचगुणानिनिरधार ॥ ३९ ॥

अथ छायालक्षण ।

दोहा ॥ लालपीतकारीहरी, श्वेतसुजगपारिवान ॥
हीराछायापांचहैं, कहतसुचारिनिदान ॥४०॥ धारा
दीसेअग्रतल, माथेशुद्धशरीर ॥ ताहितुलाधरितौ
लिकै, मोलकरतमातिधीर ॥ ४१ ॥ अरिल्ल ॥
आठश्वेतसरसौंकोतंदुलजानिये । दशतंदुलप
रिमाणसुगुंजामानिये ॥ दोगुंजाकीएकसुमंजारी
कहै । तामंजारीतौलचतुरहीरालहै ॥ ४२ ॥
दोहा ॥ हीराचौरेपातरे, उज्ज्वलशुद्धसुरास ॥
जोमंजारीदशचढ़ैं, रूपकमोलपचास ॥ ४३ ॥
उज्ज्वलधौरोचोखटौ, विप्रचाररतिहोइ ॥ रूपकपा

वैचारिसै, मंजारीभरिसोइ ॥ ४४ ॥ ॥ अरिल्ल ॥ सवामँजारीहोइतौछैसैबखानियो ॥ डेढमंजारी परकानौसैमानियो ॥ दोमंजारीतौलतौचौदहसै कह्यौ ॥ दोसत्रहसौएकअढाईकोलह्यौ ॥ तीनि मंजारीतौलमोलवत्तीससै ॥ तौलसवारीहोइमो लडेउढीकसै ॥ चारौंखूटसमानसुउज्ज्वलकांति है ॥ ताकोमोलप्रमाणसुऐसीभांतिहै ॥ ४५ ॥

अथ मोटेकोमोल।

चौपाई ॥ विप्रवरणजोमोटोहीरावैठक माथे शुद्धशरीरा ॥ तौलैमंजारीभरिहोइ ॥ साठिरुपैया पावैसोइ ॥ सवामंजारीतौलैकढै । नवेरुपैयामोल हिरढै ॥ डेढमंजारीपरकातोल । सौपैतीसआगरौ माल॥दोमंजारीतौलैजोइ । दोसैकोदोऊपरहोइ ॥ मंजअढाई तौलविचार । कीजैमोलतीनिसौचारि॥ सवा तीनिमंजारीरहै ।मोलचारिलै छप्पनगहै॥होइ चारिमंजारीपूरो । छसैवियासीमोलहरूरो ॥ पाँच

मँजारीतौलप्रमान ॥ मोलसवादशसैउनमान ॥
मंजारिछहऊपरपाउ।पंद्रहसैपचीसतिंहिभाहु॥आ
ठमंजारीतौलनिहंतारि। दोइहजारदोसैपचहत्तारि॥
दशमंजारीतौलजोहोइ। तीनिहजारछैसैकोहोइ॥
जोमंजारिबारहसाढे। पांचहजारचारिसैवाढे॥
जोमंजारिसोरहभरे। आठहजारएकुसैरढै॥वी
समंजारीभरितैंतौलै॥ बारासहसतीनिसैबोलै॥
येहीतौलमोलपरिवान॥जितनौहोइतितौपरिमान॥

अथऔरभेद॥

दोहा॥ नहिंमोटोनहिंपातरोउज्ज्वलदोषविहीन॥
सत्तरिमोलवखानिये, मंजारीकेतीन॥ मंजारी
कोदोचढैं, नवेरुपैयामोल॥ मंजारीकोएकुतो,
बीसएकसैबोल॥ तौल सवाई जो बढै डेउढैबढावै
मोल॥ इहि क्रम समझि वखानियेजितनो
होइ जु तौल॥ योव्रतमानीभावहै, चोखो
इहिक्रमबोल॥ भले बुरे वनकवनको, सम-

झि बोलियेबोल॥जोकछुऋषिनबखानियो,मंथनि मोलप्रमान ॥ ताहीतेसबकहतहौं, चतुराचित्तपहि चान॥जोहीरातनुगोलहै तासमपिंडप्रमान॥हरवो गरवोमध्यपुनि, ताकहँत्रिविधबखान ॥ विविध मोललघुकोकह्यो, त्रिविधगरेकोमोल ॥ समछैवि विधबखानियो, वारहविधियोंबोल ॥ अरिल्ल ॥ जोसमपिंडप्रमानतौलतंदुलभर्‍यो ॥ जा कोमोलपचासरुपैयाकोकर्‍यो ॥ जोदूजोविस्ता रतौलतंदुलभर्‍यो ॥ ताकोमोलप्रमाणचौगुनो क्योंकर्‍यो ॥ जोयवतीनिशरीरतौलतंदुलभ र्‍यौ ॥ ताकोमोलप्रमानअठगुनोंक्योंकर्‍यौ ॥ चा रिपिंडपरिमानमोलबारहगुनो ॥ पांचपिंडपरिमा नमोलसोरहगुनो ॥ होइछैपिंडप्रमानमोलविंश तगुनो ॥ एकसहससैदोइपिंडजोसतगुनो ॥ यव भरिजोविस्तारहैयवभरितौलेहोइ ॥ मोलहोतपा वैसहीवारहरूपकसोइ ॥ दोयवकोविस्तारतौल जोयवभर्‍यौ ॥ ताकोमोलप्रमानचौगुनौंयों

न्यो ॥ तीनयवनविस्तारतोलयवभारिरहै ॥ ता
कोमोलप्रमानअठगुनोक्योंकहै ॥

अथ और भेद।

यवसमजोविस्तारहै, सवायवभऱ्योतोल॥ताकोयहै
प्रमानकरिआठरुपैयामोल ॥ यातेदूनोहोइजो, क
रैचौगुनोमोल ॥ जोयातेतिगुनोरहै, ताहिअठगु
नोबोल ॥ यहैमोलपरमानहै, चतुरचित्तहियजा-
न ॥ समझिबोलियोदेखिकै, देशकालव्रतमान ॥
अल्पदोषजोवज्रमें, परैकोनहूंअंग ॥ ताकोमोल
प्रमानकै, चौथेहीसाभंग ॥ लक्षणहीनअकेलीज्यो
ति ॥ इकगुणमोलवचनिकाहोति ॥ हीरादेखैहाथ
प्रवीन। चौरीवैठयमाथेहीन ॥ जरतनिऊंचोहीरा
रहै। तौपुनिअतिशोभाकोलहै ॥ नीचोहीराजरै
जो कोइ ॥ छबिपरिमाननपावैसोइ ॥ दोहा ॥
धारापैनेवज्रकी, सुरमुखजानौसोइ ॥ ताहिनबेधै
चतुरनर, वज्रपातशिरहोइ ॥

अथ मंडली।

उपजखानअरुवरनरँग, दोषअंगअरुमोल ॥ आठ भाँतिजानैरतन,ताहिमंडलीबोल ॥ देशकालवर्त्त मानको,राजासभासुभाउ ॥ करिसंज्ञाअरुमोल को,जानैंजौहरिनाउ ॥ चौपाई ॥ सुंदर शालाबैठकहोई । सकलसुगंधानिछिरकैसोई ॥ त हांमंडलीलोगबुलाइ । यथाउचितआदरमनभा इ ॥ दोहा ॥ सुरदैयतअरुउरगग्रह, आ वतितिहिस्थान ॥ जहांमंडलीमोलको,बैठतध र्मनिधान ॥ रत्नपारिखीबोलिसब,बोलैंजेनअ नर्थ ॥ ग्रंथअर्थततपर्य्यनर,एकैमोलसमर्थ ॥ जो कोउघटिकोबाढ़िकहै, बढ़िकोकहैजुनष्ट ॥ ताकोग्र हअरुदेवता,मुखउपजावतकष्ट ॥ बेचनहारजुबाढ़ि कहै,ताहिनदोषानिहार ॥ वज्रमोलनरमंडली,बोलै धर्मविचार ॥ प्रथमपसारैंहाथको,करिसंज्ञाकैमो ल ॥ लोकग्रंथकीविधिमिलै,प्रगटकरैंतबबोल ॥ इ

तनेगुणजामेंरहै,कहतमंडलीसोय ॥ देवनदुर्ल्हे भजानियो,धन्यदेशजहँहोय॥ । चौपाई ॥ गुणनसहिततेजस्वीहीरा । अरुमंडलीग्रंथमति धीरा॥ जो हरिभक्तिपुरानीहोइ । ताकेगृहआवे निधिसोइ॥ कृतिमवज्रकोजोसंदेहु । तौखरसां नकुंदघसिलेहु ॥ सकलरत्नअरुसातौधातु । इतनेहोइँनवज्रविघात ॥ वज्रैकोउलिखैनछेदै वज्रवज्रकोकैसेभेदै॥ शशिहीराकीएकैबात ।क लीनकीलतबलजानैगात॥ उज्ज्वलअंगकलंकित जाके। पंडितलोगलहैंबलताके॥

इति श्रीरत्नसागरविरचितायांवज्रपरीक्षा
वर्णनं नाम प्रथमस्तरंगः

अथ मुक्तापरीक्षा॥

दोहा ॥ । वज्रपरीक्षासबसुनी,कहीकृपा करितात ॥ अबमोतिनकीबिधिविविध, कहाइ प्टसबबात ॥ उपजतलक्षणवरणसे,जातिदोषफल रूप॥ जिहिकारणअतिहोतहैं, जगतभावतेभूप॥

अगस्त्यउवाच।

घनगजमछरीवांसअहि,शंखछीपवाराह ॥मोती
उपजैआठथल, कहतमुनिनकेनाह ॥ ॥ चौपाई
घनतेउपजैमोतीजोइ ॥ अधफरहरैंदेवतासोइ ॥
विजुरीकेसीदीपतितिन्हैं ॥ देखैऔरनमूझैजिन्हैं ॥
छीखकौमूरासिहैयोग ॥ औरनकोऊमानसलोग ॥

अथ गजमोती।

जेमोतीहाथीतेहोत ॥ आठजातिमैंनीचउदोत ॥
महाप्रभाआंवलसमगोल ॥ उपजैकुंभनिकढेकपोल

अथ मछरीकेमोतीउपजैं।

मछरीगर्भजुमोतीमान ॥ हरयेगुंजाडीलप्रमान ॥
पाडरफूलरंगद्युतिगहै ॥ अलपभागनरताहिनलहै ॥
ग्रंथनितेजानैंपरिवान ॥ जेऊपंडितबुद्धिनिधान ॥

अथ सर्पकेमोती।

पातालाधिसर्पमोताती ॥ [illegible]

गाती ॥ तेदुर्लभनरलोकविचारी ॥ पापदृष्टिनहिं परैनिहारी ॥ लीलीछायाउज्ज्वलगोल ॥ शशिदु तिंडीलजितोकंकोल ॥

अथ वांसभिरेकेमोती ।

वांसजुमोतीजाकेहाथ ॥ आवैइतनीपदवीसाथ ॥ राजशिरीअरुरतनअपार ॥ आवतगेहनलागैवार ॥ द्वेषतजाकोसुरअरुसिद्ध ॥ हरतजुमोतीपरमप्र सिद्ध ॥ जातैवाकीरक्षाहोइ ॥ ताकोयत्नसु नौमुनिलोइ ॥ चहूंवेदकेमंत्रनिपढै ॥ होमहुतास नआहुतिबढै ॥ तीनिकालइनकर्मनिकरै ॥ शंखदुंदु भिनिधुनिउद्धरै ॥ वंशजुमोतीजास्थान॥दीपतिद्यौ हसभानसमान ॥ दुखविषभयरुजदूरिनशाय ॥ ज्योंतमसूरउदैउडिजाय ॥ डीलसुवदरीफलउन मान ॥ दीपातिवर्पाउपलसमान ॥ सुभ्रातिदे खि कहीयहगाथ ॥ विनुहरिभक्तिनआवैहाथ ॥

अथशंखकेमोती।

॥दोहा। पांचजन्यसंतानतैंहरनपापाकियआप॥ मैंतौउपज्योशंखतें,हरिमुखपराशिप्रताप॥ संध्या रागसमानद्युतिपांडुकश्चडासमान॥ तद्रुपीलघु स्वच्छसुर,पिछकाजयरिवान॥ दुर्गमठौरसमुद्रमें, तहांसंचारितहोइ ॥ अलापपुण्यनरदेहके,हाथन आवसोइ॥

अथवाराहकेमोती।

॥दोहा। ॥ वंशआदिवाराहके,जेउपजेवारा ह॥ तितेप्रसुतिमुक्तानिकी,कहतमुनिनकेनाह ॥ जगतीजनितावनानिमें, सबथलनाहींहोइ ॥ दुर्ग मथलकेकीनवत,तहांसंचारितहोइ॥ ।त्रोटक॥ उपजैंमुकुताफलकोलशिरै॥ सुरगंधिसुमारगभूमि गिरैद्युतिसूकरडाढकेछोरनिकैं।पीरवानसवातमको रानिकैं॥ उपजैशिरसूकरजे मुकता॥ सुरसिद्धिप्र सिद्धिनिकभुगता॥

अथखानिकेमोती

॥ दोहा ॥ वज्रहनैंवलअसुरके, जहँजहँगि-
यौदंत॥ तहँतहँखानिसमुद्रमें,तिहिकीतहँउतपंत॥
प्रथमखानिसिंहलभई, द्वितियखानिअरवाट ॥ पा
रसीकभइतीसरी,चौथीवर्वरघाट ॥ ॥ छप्पय ॥
अतिसनिग्धमधुवरनखानिसिंहलहंउपज्जिय ॥ श
शिसनिग्धमधुपीतअरवाटजदुतिसज्जिय ॥ सित
सनिग्धदुतिविमलपारसीकजप्रसुनि ॥ अति
उज्ज्वलअतिरूक्षजानिवर्वरहखानिमुनि ॥ भज्ज
तविहजंमयातिजलात्रिविधिडौलपरिमानअति ॥ अ
द्भुतचरित्रसुनिमुनिसबै कहीनपरातिकरतारग
ति ॥ १ ॥ रुकुमनामइकसीतसुसंततिदुर्लभ
सुर ॥ प्रमदअंतविख्यातजानुजानैनऔरगुर ॥
ताकोमोतीसरसुसरसुजातफिलजोई ॥ कुंकुमदु
तिवदुरालगरुवचिक्कनमृदुलोई ॥ तिहिकोउदंड
अवमालसुनिसहसपुरसऊंचधिरानि ॥ कंचनस

पूरपूरितकरैसुवहैमोलवाकोवरानि ॥ तोमर ॥ गुणनिसंयुतहोइ ॥ यहमोलपावैसोइ ॥ गुणनिहीनोहोइ ॥ तहँत्रिविधितैसोसोइ ॥ ॥ दोहा ॥ नौप्रकारमोतीकहे,सवैखेतअनुसार ॥ तामैसागरद्वीपके,वर्त्ततजगतअपार ॥ दहतंदुलकीहैरती,मोतीतालप्रमान ॥ न्यारेन्यारेरतनकी,न्यारीतौलवखान ॥ मोतीकेनौदोषहै,अठगुनजानौजान ॥ आठभांतिकीतौलहै,आठइमोलप्रमान ॥ सुक्तिपरसअरुमक्षइग,जठररक्तदुतिअंग ॥ महादोषयेचारिहैं,छोडोचतुरप्रसंग ॥ तिरवर्त्तकचापलत्रशिर,दीरघपारसकृत्त ॥ पांचदोषसामान्यहैं,समझिदेखियोचित्त ॥ ॥ छप्पय ॥ ॥ द्वीपपरशतैकोढ़मक्षद्दगपुत्रहिनाशै ॥ जठरकरैदारिद्ररक्तदुतिमरनप्रकाशै ॥ भाग्यहीनातिरवर्त्तचपलअतिवादुवढावहि ॥ त्रशिरस्यारमतिभंगअधिकदीरघउपजावहि ॥ विनउद्यमकालसमृद्धपुनिपारसकृतमोतीकरै ॥ नवदोषछांड़िकारिमंडलीसुषटगुणकोचित्तहिधरै ॥

अथ गुण ॥

प्रथमसुतारसव्रतपुनि,गुरुसनिग्धपहिचानि ॥ न्मीलस्फुटगुणाहि, परखिजौंहरीजानि ॥ चौपाई ॥ षटगुणसंयुतमोतीजोइ ॥ जैसोग्रंथनकह्योसुहइ ॥ जोनरवाकोधारणकरै ॥ महापापतेसोउद्धरै॥ गाइविप्रगुरुजेवधदोष ॥ तातेकरैसुमुक्तामोष ॥ सातजन्मकोपापनरहै ॥ एकजन्मजोमोतीगहै॥ ॥ श्वेतपीतऔरमधुवानि ॥ मुक्ताछायात्रिविविध खानि ॥ ॥ दोहा ॥ ग्यारहतंदुलकीरती,मो तीतौलप्रमान ॥ न्यारेन्यारेरतनकी, न्यारीतोलव खान ॥ विजयसवैया ॥ एककोडेढसवाकोस- वादोइडेढ़केसाढ़ेकतीनिगनावै ॥ पौनेद्वैसातद्वो ग्यारासवादोकेचौदाअढ़ाईकेसत्रालहावै ॥ पौन हूतीनिकेहोतइकईसतिहिकेछबीसयहैमनभावै ॥ बोलैबत्तीससवातीनिकेअरुसाढ़ेकेचालिसहींसुव तावै ॥ चौपाई ॥ पौनेचारिचवालिस

कहौ ॥ पूरोचारिपचासहलहौ ॥ अबकरिपांचर
तीकोभाउ ॥ साढ़ेआठरुपैयापाउ॥सवाचारिअट्टा
वनमोलु ॥ साढ़ेचारिसरसठीबोलु ॥ पौनेपांचपौ
नुसैकह्यो ॥ पचरतियाचौरासीलह्यो ॥ सवापांच
जोतोलप्रमान ॥ दोघटिसौकोमोलबखान ॥ साढे
पांचजुतोलैहोइ ॥ बारहऊपरसौकोसोइ ॥ जोपौ
नेछः तोलैंकढै ॥ मोलएकसौछब्बिसचढै ॥ जोपूरो
छहवैठैतोल ॥ तौचालीएसकुसौमोल ॥ चौदहरू
पकबैठीपाउ ॥ इहिक्रमछठीरतीकोभाउ ॥ रतीस
वाछैहैतोलैजोइ ॥ तिरसठिऊपरसौकोसोइ ॥ जो
साढछैरतीप्रमानु ॥ मोलएकसौछ्यासीजानु ॥
पौनेसातजुतोलैकढै ॥ नौऊपरदोसौकोरढै ॥ पूरो
सातरतीजातोल ॥ दोसौबत्तिसकीजैमोल ॥ पाउ
पाउपरतेइसबढै । छतेंसातलौंइहिक्रमचढै ॥
सातरतीलौंयोपरिमानु ॥ आगेऔरभेदपहिचा
नु ॥ जितनीतोलसवाईबढै ॥ तिहितेमोलजुदूनो
चढै ॥ जौंलौबीसरतीलौंजाइ ॥ तौलौंइहिक्रममो

लौंबिकाइ ॥ सवाइकईसरतीजोहोइ ॥ टंकप्रमान कहावैसोइ ॥ ताकोमोलसुनोमुनिईस ॥ सातहजारचारिसौबीस ॥ यातैंदोदोरत्तीबढै ॥ दोदोसहसरतीप्रतिचढै ॥ जौलौंतीसरतीभरिगनौ ॥ तौलौंइहिक्रममोलहिभनौ ॥ इतनेतेजोआगेहोइ ॥ ताकोभाउसुनौमुनिलोइ ॥ तीसरतीकोसुनिमुनिरीस ॥ सहसपचीसचारिसौबीस ॥ यातेएकरतीबढ़िजाई ॥ तीनिहजारमोलचढिजाई ॥ जौलौंहोइरतीचालीस ॥ तौलौंयहक्रमगुनिमुनिईस ॥ जोबहुमोतीतौलरतीइकतीसको ॥ अट्ठाईसहजारचारिसौबीसको ॥ जोबत्तीसरतीइकतीसहजारको ॥ अधिकचारिसौबीसमोलनिरधारको ॥ जोगुंजातेतीससहसचौतीसको ॥ तापैअधिकौऔरचारिसौबीसको ॥ जोचौंतीसरतीसैंतीस हजारको ॥अधिक चारिसौबीस सहज बाजारको ॥ जो पैंतीसरती चालीस सहस्रको ॥ आधिकचारिसौबीस वचन मुनिमित्रको ॥ जोयहुमोति

होइरतीछत्तीसको ॥ तौतेंतालीसहजारचारिसौबीसको ॥ जोवहमोतीहोइरतीसैंतीसको ॥ तोछयालीसहजारचारिसौबीसको ॥ जोवहमोतीतौलरतीअरतीसको ॥ उन्चासहजारचारिसौबीसका ॥ उंतालीसरतीकादानोएकहै ॥ तौबाउनसहस्रचारिसौबीसाविवेकहै ॥ जोमोती परमावरती चालीसको ॥ तौपचपनहजारचारिसौबीसको ॥ दोहा ॥ जोपक्कोबावनरती,षटगुणसजलसुढार ॥ ताकोइच्छतदेवता,दुर्लभमुनिसंसार ॥ ताकेमोलप्रमानको,कहतग्रंथअनुसार ॥ एकलाखलैआगरौ,दशअरुसातहजार ॥ ॥ चौपाई ॥ निर्मलगोलतौलगुरुहोइ ॥ चिक्कनचारुचिलकही सोइ ॥ कोमलताअतिबिंबादिखावै ॥ सोमुक्ताइहिमोलहिपावै ॥ दोहा ॥ छोटाभयोतोक्याभयो,पूरणगुणपरिमान ॥ ऐसेमुक्ताफलनिको,वांछितदेवदिवान ॥ सहितकामनाजोधरै,तजि शे

भाकीआप ॥ पूरणसुदिमनकीकरै,हरैपुरा
पाप ॥ मुक्तापहिरैमुक्तिको,चतुरपाइपरसंग ॥नि
संदेहयहजानवी,तजिनौदोषप्रसंग ॥ चौपाई
मोतीकृत्रिमकरतसयानैं ॥ ताकीपरखपरीक्षाज
नैं॥मूतगाइकोभांडैभरै।तामेंमोतीलैकै धरै ॥ जामें
मोतीराखैराति ॥ भोरहोतपहिचानैजाति॥ जौन
सुकरई कछू विकारु ॥ तौमोतीउत्तमनिरधारु॥
श्वेतवस्त्रमेंमोतीलेइ ॥ तामें भूसीधानकी देइ॥
भूससहितपलमलैदबाइ ॥ कृत्तिमकोसंदेहनशाइ॥
जोकाहूमेंकृत्तिमहोइ ॥ मीडतभस्मतासुकीहो
इ ॥ जोअतिउज्ज्वलआवैवांनि ॥ तौआछौमो
तीपहिचानि ॥

इतिश्रीरत्नसागरेमुक्ताफलपरीक्षावर्णनंनाम

द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

अथ पद्मरागपरीक्षा ॥

॥ चौपाई ॥ अगस्त्यउवाच ॥ ॥ तीनिलो
कहितपूरणकाम ॥ मान्योइंद्रअरीबलनाम ॥ ता
कोरुधिरवज्रपराइ ॥ गिन्योसुसिंहलद्वीपाहिजाइ ॥
गिरचोरुधिरभूमिमेंजहां ॥ पद्मरागमणिउपजी
तहां ॥ नदीश्रवनगंगाकेतीर ॥ दमकतिपदूम
रागकीभीर ॥ केअंगारअग्निकेरहैं ॥ कैखढोत
ठिकानेरहैं ॥ किधौंदिपतिदीपनकीज्योति ॥ य
हछबिनिशिनखतनकीहोति ॥ दोहा ॥ पद्म
रागमणिकेकहे,तीनिभेदजियजानि ॥ इक
सुगंधकुरविंदपुनि, पद्मरागपहिचानि ॥ जदिये
उपजतएकही, एकैनामनिषेदु ॥ ताद्विपतिहिकेरंग
को, न्यारोन्यारोभेदु ॥ सुनीमुनिननेमाणिनके, क-
हतग्रंथअनुसार ॥ उपजखानिगुणदोषरँग, जाति
वरणव्योहार ॥ तोलमोलमरमानसब, धारणादि
लभाउ ॥ प्रथवकह्योज्ञमंडली, ताकोवहैसुभाउ

॥ तोमर ॥ इकखानिसिंहलठौर ॥ कलपु
दूजीऔर ॥ तिरतीपरधूखानि ॥ अरुतुजंतुवर
नि ॥ उत्तमजुसिंहलखानि ॥ कलिपुरहमध्यम
नि ॥ गुनरंध्रआकरनीच ॥ अतिनीचतुरवीवीच
॥ चंचरी ॥ ॥ पद्मरागसुजातिसिंहलद्वीप
वननग्रके ॥ कल्परेकलीपोषरक्तपीतकोमलअं
के ॥ रंधजातिसुतामरातिनिरक्तस्यप्रभाधरी
तुवरेभवहीनवक्रमअसितसितपीरीहरी ॥

अथ आठप्रकार माणिकदोष।

॥ दोहा ॥ विक्रतछांहअरुदुपादिपुनि,भिन्नक
रकरोहोइ ॥ लसुनपद्मकामलजठर, धूम्रकहतमु
निलोइ ॥ ॥ फलविजैसवैया ॥ ॥ विक्रतछांह
कोमानि कुपर्वतबंधुविरोधकेदेशछुडावै ॥ द्विपददो
षभगैरणतेअरिदौरिसुतोतरवारिलगावै ॥ भिन्न
कुदोषमहामणिमेवहदीजियेडारिजोसैतिहूंपावै ॥
वंशहरैविधवाघरहोइततक्षणपुत्रकोशोकादिखावै ॥

कर्करदोषकोमानिकुपर्वतसोदरपुत्रपशूनिहरैजू ॥
कंकहरामधुविंदअशोको,अंकुरसौविधितीनिपरैजू।
कामलदोषकहाव्रतुवोधनलक्षिसुवीराविधानहरैजू ॥
छप्पय ॥ ॥ रंगहीनजडरतनभूषिभूषणजोधरई ॥
निद्रासोकाविनाशकलहअपवादजुकरही॥धूम्रवरण
मणिकरतिहाथधरतानिविनाशभय ॥ अबसुनिवी
गुणचारिदेतजगमाझजितीजय ॥ चिक्कनगरबानि
मलसुरगगुणविचारिपाहिरैप्रबल ॥ गजवाजिधरनि
सौधेनिकेदानदयेसमर्पुनिफल ॥

अथ छयभेदसंयुता ॥

कछुलाखकेरँगराजही ॥ कछुपद्मशोभासाजही ॥
परिपक्कदाडिमबीजसे ॥ लखिलोध्रपुष्पनिसेलसे
॥ द्युतिवीराबिद्रुमकीगहै ॥ कछूजपापुष्पप्रभालहै
॥ सुरवृक्षकुंकुमफूलसे ॥ रँगकुसुमसिंदुपफूलसे ॥
द्युतिचित्रपुष्पयथावसै ॥ कछुकिंशुकादिनमेल
सै ॥ कछुदमकद्युतिखद्योतमें ॥ कछुफूलसेंमरके

रमैं ॥ किचकोरकोकिलऐनसे ॥ शुभपक्षिसारस नैनसे ॥ कछुरुधिरगुंजसुकांतिहै ॥ मणिछांहसो रहभांतिहै ॥ ॥ऋषिरुवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पद्मरागकुरविंदपुनि, अरुसौगंधिकसोइ ॥ न्यारे न्यारेवरणकहि,संशयडाऱ्योखोइ ॥

अगस्त्यउवाच ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ लाखकमलजुगुनूंअंगार ॥ कोकिलसरसदृगनिअनुसार ॥ कौएचारुचकोरवखानौ॥पद्मरागइनभाइनिजानौ॥ लक्ष्यारुधिरलोषसिंद्राक ॥ किसुकागुंजाअरुवंध्राक ॥ अतिरातौकछुपीरोभाउ ॥ तितौजांनिकुरविंदसुभाउ॥कछूनीलतालीनिंहोइ ॥ कहतरत्नसौगंधिकसोइ ॥ कुकुमलाखललाईलीने ॥ सोसौगंधिककहतप्रवीने ॥ छायासबैसुनीमुनिराई ॥ अबसबदीजैमोलवताई ॥ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ नवग्गकोसुनियेमोल ॥ इकइकतीनितीनि वि-

षिबोल॥कांतिरंगइकईशबखानी॥ नौइकईसतीसए
जानी ॥ ॥ दोहा ॥ जिहिदीपतिऊरधउहै,
आसपासहूंजानि ॥ सोईमणिमाणिकाविषै पिंड
रंगपहिचानि ॥ दगदगातिजोमल्लषी,अगिनिरा
शिकीकांति ॥ सोईमणिमाणिकाविषै,कांतिरं
गकीभांति ॥ उदयसूरकेसाम्रहै,दर्पनपरमानिदेखि॥
ताहीमणिकीछांहमें,कांतिरंगलखिलेहि ॥ कांति
सितसरसौंसरस,मणिप्रमाणकैतोल ॥ तातेंरंगइ
केसविधि,करैंसयानैंमोल ॥ जौसमजोविस्तारहै,
जौभरिऊंचीजोति ॥ पदमरागकीजातितौ, दोसौ
दशकीहोति ॥ तैसोजोकुरविंदतौ,चौथेहैंसानून ॥
जौसौगंधिकजातिहै, आधमोलबिहून ॥ जौसम
ऊँचीजोतिजो, तौशतसाढ़ेतीनि ॥ वांईदाहिनी
जोतिजो,पौनेदोसौबीनि ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
सौगंधिकजौऊंचीजोति ॥ सौसत्तावनकीमतिहो
ति ॥ पासजोतिसतहत्तरिमोलु ॥ इहिक्रमविदी
चित्तमेंबोलु ॥ ॥ दोहा ॥ जबतीनिजुपरिव

नकैं,एकएकबाढ़िजाइ ॥ ताकोदूनोमोलकरु,जौलौं आठजवाइ ॥ मणिमात्रापदअंशतैं,कहूंन्यूनजोहोइ, दूनौंमोलघटाइकै,कहतसयानेलोइ ॥ सरसौंके परिवानते,इकइककीतिबढ़ाइ ॥ दूनोमोलजुबाढ़िब ढ़ै,घटतीमोलघटाइ ॥ जोकुरविंदजुशुद्धमणि,कांति रंगइमिहोइ ॥ चरननिमोलुघटावहू,तेहीक्रमसब कोइ ॥ परमअवधिजौतोलअरु,कांतिरंगइमिहो इ ॥ रत्नपारिखीतासुके, मोलधरावहिदोइ ॥ तौल अधिकतेअधिकजो, सकलकांतिमणिजोइ ॥ तौले मेंतौकछुनहीं,कांतिमोलवौहोइ ॥ कोटछतीसउन ईसलख,सहसबतीससमोइ ॥ पद्मरागकेमोलकी, परमअवधियहहोइ ॥ सबलक्षणहूंसाहित मानि, अंधतुंबरजखानि ॥ सिंहलतेघाटिछपदसो, कलपू रवदबखानि ॥ चौपाई ॥ लक्षणयुतकोउत्तम मोलु ॥ लक्षणहीनसुजोकछुबोलु ॥ लक्षणहीन जुउत्तमखानि ॥ खानिंहिकोतहँमोलबखानि ॥ प द्मरागलघुकौमोलुतजौ ॥ लघुसुवज्रगुरमाणिक

सजौ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पद्मरागमणिकृतिम
को, जोउपजैसंदेहु ॥ मद्मरांगलैदूसरो, तासोंथ
सिकैलेहु ॥ जुरैअजातिनजातसों, अधऊरधपरि
वान ॥ कटैअकेलोकृतिमज्यौं, कूषमंडकरिवान ॥
इति श्रीरत्नसागरेपद्मरागमणिफलपरीक्षाना
मतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

अथ इंद्रनीलमणिपरीक्षा।

॥ दोहा ॥ ॥ वज्रहनैबलअसुरके, जहांगिरेहैंनैन
॥ तहांभईहैंखानिमणि, इंद्रनीलकीऐन ॥ महान
दीहैगंगसम, सिंहलद्वीपसुदेश ॥ उपजतिकूलदु
हूंनितहँ,इंद्रनीलशुभवेश ॥ एककलिंगजुदेशमें, अ
धमखानिवहजानि ॥ उत्तमसिंहलखानिके,महा
नीलपहिचानि ॥ इंद्रनीलकीखानिद्वौ, सिंहलएक
कलिंग ॥ महानीलसिंहलसरस, नामहिकौसुक
लिंग ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चारिवरणनीलेपहि
चानौ ॥ सोयाभेदनिकोउनमानौ ॥ आभासतेसु

विप्रबखानौ ॥ कछूअरुणक्षत्रीउरआनौ ॥ पीरी आभावैश्यकह्योहै॥ कारोनीलाशूद्रलह्योहै ॥ कल पुरउपजैनीलाजोइ ॥ गईआंखिकीदीपतिजोइ ॥ नीलनिकेगुणदोषसुनौमुनि ॥ छांहफलाफलमो लसबैपुनि ॥ दोषछैचारिमहागुणजामहि ॥ ग्या रहरंगसुभाउसुतामहि ॥ षोडशमोलप्रवानसुपा वत ॥ पूरबपंडितग्रंथबतावत ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अभ्रककर्कराभिन्नपुनि,तासुमृत्यपाषाण ॥ महानी लमणिइंद्रके,एषटदोषप्रमाण ॥ ॥ विजयसवैया ॥ अभ्रकदोषमज्यौमणिनीलकहाफलदेतसुनौमु निराई ॥ आठविभौहरिलेइसबैशिरऊपरराजप रैअकुलाई ॥ दूसरोकर्करदोषमहाकहिपर्वततेताहि धरौजिनिभाई ॥ औषधिदेइधन्वंतरिआइजोजी उलएबिनव्याधिनजाई ॥ १ ॥ दूषणत्रासकोयौ फलपर्वतेनाहरसिंहनकीभयभारी ॥ भिन्नकुदो षकरैबिधवाघरहैसुतशोकनिकोभ्रमभारी ॥ मृ

त्युकदोषजोनीलहियोकाहिकोढ़िकरैनखरोमानिहा
री ॥ पाहनदोषभैगरणहारिपरैशिरखङ्गनकीपट
तारी ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चिकनोंगरुवतरंगयुत
पारसरंजकुहोइ ॥ नीलाकेयेचारिगुण, कहतमुनी
सुरलोइ ॥ विभौआयुआरोग्यता, भागसिंततिवृ
द्धि ॥ इंद्रनीलकेधरनितैं,होतिजुइतनीसिद्धि ॥२॥

अथ छाया ॥

मोर, विष्णु, नभ, कमल, अलि, कोकिल, कलरव
मेह ॥ फूलसिरस, अरसी, अवनि,ग्याराछायाएह॥
गुणनसाहितदोषनराहित, छायापिंडप्रमान ॥तिनके-
सोरहभांतिके, मोलकहतपरिमान ॥ दूधमध्य
मणिडारिये,नीलोपयजोहोइ ॥ इंद्रनीलउत्तमवहै,
उत्तममोलनिसोइ॥ आसपासपसरैजुद्युति,औरैद्युति
छविजाइ॥ कांकिरंगमाणिककहै,तेहीमोललहाइ॥
चौपाई ॥ ॥ सौगंधिकमाणिकेअनुसार ॥ इंद्र
नीलगुणहीविचार ॥ उत्तमखानिअदोषिनिटोल ॥

घटिबढिपिंडअधिकैमोल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आसपासदीपतिउठै,जौहीकेपरिवान ॥ ताकोमोलजुपांचसौ, कहतजुरत्ननजान ॥ ॥ चौपाई ॥ आठजौभऱ्योपुरपरिवानि ॥ चौसठिसहसमोलसो जानि ॥ नयेपुरानेलक्षणसुनै ॥ बालवृद्धइननाम निगुनै ॥ दोहा ॥ ॥ अरसीफूलतुषारऋतु,लगि तुषारुजिमिहोइ ॥ इंद्रनीलमणिस्वच्छको, लक्षण जानोसोइ ॥ दुपहररविकीकिरणिलगि, अरसी फूलविभांति ॥ त्यौंजीरानिमणिनीलकी,देखिपराति हैकांति । सूरजअथवतहोतज्यों, लगितुषारापियरा इ॥अरसीहीकेफूलज्यों,नीलमणीपैखाइ॥नीनिवरण पाषाणबहु,लखियतुपुहुमीमांह ॥ विभौआयुआरो ग्यता, भागिसंततीछांह ॥ इंद्रनीलकेधरनते, होतीइतनीसिद्धि ॥ अन्नधान्यअरुलक्ष्मी, बाढैपरमप्रसिद्धि ॥

इतिश्रीरत्नसागरेइंद्रनीलपरीक्षा वर्णनं नामचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

अथ मरकतमणिपरीक्षा॥

॥ दोहा ॥ ॥ वलदैयतकेपित्ततें,मरकतउपजी जानु ॥ सिंधुतीरगिरितुरकादिशि,जहतहँखानिव खानु ॥ सातदोषगुणपांचहैं,छायाआठविधान ॥ बारहविधिकेमोलको,मरकतमणिपरिवान ॥ —

अथ दोष॥

रूखोअरुविस्फोटपुनि,जठरमलिनपाषाण ॥ कर्क सबलुवखानिये,सातौदोषप्रमाण ॥ धारणफल ॥ भुजंगप्रयात ॥ ॥ धरैलक्षिदोषैलहैव्याधिभा री॥लगैखड्गमाथेजुविस्फोटभारी ॥ सबैबंधुसौवे रपाषाणजामैं ॥ नशैचक्षुकानामलींदोषजामैं ॥ हरैककर्कएपुत्रवैधव्यबाला ॥ जयाजादिभौसिं धसपादीयजाला ॥ करैमृत्युकोदोषसर्वस्ववाके ॥ इदंदोषसातौमहामर्कताके ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुणछायाअरुमोलपुनि,कहौसुनौचितलाइ ॥ पां चगुणनिसंयुततनुःहोतसदासुखदाइ ॥ कालकूट

दैआदिसब,विषकीआपहरंत ॥ जोमरकतमणि पांचगुण,संयुतशोभधरंत ॥ लेजरंगगुनुचीक नौ,निर्मलकिरणिपसारु ॥ एगुणपांचसंयुक्तसो,म रकतमणिविषहारु ॥ ज्योंपुरइनिकेपातमें;जलको विंदुलसाइ ॥ त्योंहीमरकतमणिलखौ, निर्मलरंग सुभाइ ॥ करधरिरविसनमुखनिरखि,हरीछांहजो होइ ॥ ढिगकीवस्तुहरीकरै,मर्कतउत्तमसोइ ॥ हयहाथीरथधेनुध, नदानदियेफलजोइ ॥ सोई मरकतमणिधरै, कहतमुनीसुरलोइ ॥

॥ अथ छायासंयुत ॥

कछुगरुडपंखप्रभाधरैं ॥ कछुनीलपंखनकीहरैं। कछुकांचमध्यसुभाउसौ ॥ जलुसैवालानिप्रभानु सौ ॥ सुकपक्षअरुखघोतसी कछूसिरसकुसुम उदोतसी ॥ कछूकिर्नपट्टप्रभागहै ॥ वसुछांहमर्के [illegible]कीलहै ॥ ॥ तोटक ॥ ॥ दुतिचारिभांतिनि [illegible]है ॥ इनमध्यहैमुनिसोकहै ॥ वहुवर्णभेदनि

कोधरैं ॥ तिहितेसुफिरिफिरिउत्तरैं ॥ ॥ दोहा ॥
कारोहरोसुदेखिये, तुच्छकताकोनाउ ॥ सबहीतेब
ढिमोलहै, विसकोहरैसुभाउ ॥ कछूश्वेतकछुअरुण
ता, गहैंहरितताहोइ ॥ ताहिसिवालीजानिये, हरि
तअरुणसितसोइ ॥ कछूपीतमिलिहरितता,उज्ज्व-
लजाकीहोति ॥ सुवापंखतासोंकहैं,जाकीऐसीजो-
ति ॥ उज्ज्वलजालकीहरितता, कछूश्वेतदुतिअंग॥
सोमरकतमणिजानिवी, सिरसफूलकेरंग ॥ ॥ चौ
पाई ॥ ॥ सिरसफूलकोविप्रवखानौं ॥ जलसे
बलक्षत्रीरँगजानौ ॥ सुवापंखकोवैश्यविचारो ॥
तुच्छकसहजशूद्रगुणकारो ॥ गुणसंयुतनिदोंषि-
लसोइ ॥ हरैविषमताविषकीसोइ ॥ सिरसपजी
कौतुच्छकजानि॥क्रमतेचारौंवरणवखानि ॥ धारण
पलकोवैहसुभाउ ॥ पूरबकह्योजुवज्रप्रभाउ ॥ ह
रितश्यामामिलितुच्छकजानि ॥ सबतैंपावैमोलप्र
वानि ॥ बारहविधिकेमोलहिसुनौ ॥ चहूंवरणकेम

नर्नेगुनौ ॥　　॥ दोहा ॥　॥ पद्मरागकेडौलको मोलजुवरण्योहोइ ॥ मरकतमणिसाधारणको, मोलबखानौंसोइ ॥　　॥ चौपाई ॥　　॥ पद्मरागदुतिविस्तरिमोलु ॥ सहजजातिमरकतकोबोलु ॥ ऊर्द्धवार्तिकमाणिकजोइ ॥ सुवापंखमरकतमणिसोइ ॥ पारसदुतिमाणिकजुबखानि ॥ सिरसफूलमरकतसोजानि ॥ सबगुणमाणिकमोलजुकरौ ॥ तुच्छकमरकतमाणिकधरो ॥ मरकतसहजपांचसौधरै ॥ सुकदुतिदोसैबारहकरै ॥ सिरसफूलइकुसैअट्ठावन ॥ सैबलअसीएकसैपावन ॥　　॥ दोहा ॥ सबगुणसंयुतलक्षणनि, आठजवाभरितौल ॥ परमअवधिचौसठिसहस,मरकतमणिकोमोल ॥ पद्मरागदोषनिसहित, मोलघटौजिहिभांति ॥ त्यौंहीमरकतदोषको, मोलघटोलखिकांति ॥　　॥ चौपाई ॥　　॥ तुक्षिकुपंनामाणिककांति॥मोलजानिवीएकहिभांति ॥　　॥ दोहा ॥　　॥ वलदैयतके

अंगते, उपजेरतनअनेक ॥ तीनिलोकहितकारनै, देवनकन्योविवेक ॥

इतिश्रीरत्नसागरेमरकतमणिपरीक्षावर्णनंनामपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

॥ अथस्फटिकपरीक्षा ॥

वलदैयतकीदेहते, सवगिरियौजिहिदेश ॥ तहँतहँखानैफटिककी, प्रगटभईशुभवेश ॥ उत्तरदेशतुषारथल, उदधिनर्मदापास ॥ विंधिशैलनिविचविचसुथल, उपजेफटिकप्रकास ॥ ॥ छाया ॥ वारिवृंदवरषाउपलहिसुघनसारनछित्र ॥ हंसकलानिधिशूरदुतिआठछाहलखिमित्र ॥ चंद्रकांतिमणिएककहै,सूरकांतिमणिएक ॥ नीरकांतिमणिएकहै, हंसगर्भहैएक ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ चंद्रकांतिअमृतउपजावै ॥ सूर्य्यकांतिमेंअग्निप्रजावै ॥ नीलकांतिजलश्रवैसुदेखु ॥ हंसगर्भविषहरैसुलेखु ॥ दोहा ॥ ॥ सवहीकप्रातिरूपको, फटिकअकेलोदेखि ॥ फटिकरूपकोदूसरो, औरनकोऊलेखि

॥ शुद्धफटिककीजातिमें,रंगहोइइकईश ॥ न्यारेन्यारेनामको, जानतसुजनसुधीश ॥ माणिकलीलापुष्पपुनि, तीन्योएकप्रचाल ॥ सबतेबाहिरतीनिहैं, मुक्तावज्रप्रवाल ॥ अतिनिर्मलअतितेजपुनि,जाराजिरमनहोइ ॥ उत्तमजानौफाटिकवह,मोलअल्पहीसोइ ॥

इतिश्रीरतसागरेस्फाटिकमणिपरीक्षावर्णनं नामषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

अथ वैदूर्यमणिपरीक्षा ॥

॥ चौपाई ॥ ॥ वैदूर्यइकपर्वतजानि ॥ सोवैदूर्यमणिनकीखानि ॥ ताकेसुनियोरंगसुभाव ॥ मोरकंठकेउपजैंनाव ॥ कछूकवांसपत्रउनहारि ॥ कीरपुच्छइकपंखविचारि ॥ नीलकंठपक्षीकेरंग ॥ कछुदूतिनैनप्रफुल्लितअंग ॥ सुरनचिरीकेअँडासमान ॥ गिरिकाचमेरंगउनमान ॥ भूमिरंगदुतिलीनेहोइ ॥ वैदूर्यकमणिछायासोइ ॥ केतहेतपाहिरैगुनग्राम ॥ भाषाकहैंपिरोजानाम ॥ होइअदोषि

लउत्तमखानि ॥ अर्धमोलपंनातेजानि ॥ बीछी कोविषचढैनताहि ॥ जोवहपाहिरैबीछीखाइ ॥

इति श्रीरत्नसागरेवैदूर्यमणिपरीक्षा नामसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

अथ लहसनियानिपरीक्षा ॥

भाषानामलहसानियांकहौ ॥ ग्रंथनमैरुधराछक लहौ ॥ चारिवरणजेरंगनिमेंभन्यौ ॥ ऊरधरेखाको उद्धन्यौ ॥ सेतललौंहौंपीरोहरो ॥ औरधुवाधारौर गुभरौ ॥ सेतसूतजोफिरैसवत्र ॥ ताकोउत्तमजानो मित्र ॥ ऊरधरेखाजामैंतीनि ॥ सोसवहीमेउत्तमवी नि ॥ ऐसीमणिदुर्ल्लभसंसार ॥ पावैजाकेलिखी लिलार ॥ आठरतीकोउत्तमथानु ॥ मोलपचासजु रूपकजानु ॥ ॥ इतिलहसानियांपरीक्षा ॥

अथ लाजवर्दपरीक्षा ॥

॥ दोहा ॥ ॥ लंकाकेपर्वतनमें, सिंहलद्वीपसुदेश ॥ राजावर्त्तकनाममणि, उपजाततहांसुदेश ॥

नीलवरणशोभाधरै,वासुदेवजिनिरंग ॥ सूक्ष्मकछु
कछुदेखिये,हाटकछींटाअंग ॥ इंद्रनीलसमशोभ
सब, कछूनताकेगात ॥ राजावर्त्तकनाममणि, कह
तमुनिनकेतात ॥ वाहीसोरावटिकहै, हरैनैनके
रोग ॥ लाजवर्दभाषाकहै, वाहीसोंसबलोग ॥ रंग
रूपबहुविधिबन्यो, सबमेंभलोहिषाइ ॥ सभाजौंह
रीजनमकी, सोंनेमोलविकाइ ॥ इति श्रीरत्नसागरे
राजावर्तकवर्णननामअष्टमस्तरंगः ॥

अथ पुष्परागमणिपरीक्षा।

॥ दोहा ॥ ॥ बलदैयतकीदेहते पुष्परागमणिजा
नि ॥ ताकेअबलक्षणकहूं, बुध नकेमनमानि ॥
तोटक ॥ ॥ करहाटकहाट ॥ । ॥ द्युतिविंदेव
गुरुसमअंग ॥ अतितेजकरैशहाइ ॥ सनफूलरंग
हजोइ ॥ पटत्रस्यदोष विहीन ॥ तनताहिधरतप्र
वीन ॥ मणिनीलइंद्रसमान ॥ निवहत्तमोलप्रवान
॥ बहुपुत्रपशुधनधाम ॥ पहिरैमिलैमनकाम ॥गुरु

देवहितअतिदान ॥ मणिपुष्परागहिजान ॥

इतिश्रीरत्नसागरेपुष्परागमणिपरीक्षावर्णनं
नामनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

अथ गौमोदिकपरीक्षा।

॥ दोहा ॥ ॥ उपजेदानवदेहते, मणिगननाना भेद ॥ कल्परसालासोकहैं,उपजैमणिगौमेद ॥
॥ चौपाई ॥ ॥ रक्तपीतामिलिछायाअंग ॥ सहतबूंदज्योंगगनउतंग ॥ गाइमूत्रदुतिरंगप्रकाश ॥ राहुग्रस्योजिमिचंदअकाश ॥ कछूअग्निकोपायोभाव ॥ इतेजानिगोमेदसुभाउ ॥ जानोपटलीतासविवरनौं ॥ सेतमिलैतेहातनधरनौं ॥ स्वच्छतेजतेगुरुचिकुनचारु ॥ करैजौंहरीमोलविचारु ॥ राहगतेहकोअतिसुखदाई ॥ पुष्परागतैं अधिकाविकाई ॥

इतिश्रीरत्नसागरेगोमेदपरीक्षावर्णनं
नामनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

अथ कर्कैतकमणिपरीक्षा।

वलदैयतकेअंगप्रकार ॥ धरतीउपजेरत्नअपार ॥ सलिताशैलसमुद्रभयपास॥ करकेतनमणिभएप्रकास ॥ पीतहरितसितमिलिकैकांति ॥ प्रज्वलितनित्तकांतिकीभांति ॥ सनवनफूलनकेसेरंग॥ कछुकलसैंपीतारिकेअंग ॥ पुष्परागमणिकेसीभांति ॥ तामैंकछूमटौहींकांति॥ पर्वतज्वारिवीजुद्युति गहै ॥ बिनासूतलहसनियांमहैं ॥ इतनेरंगानिमिलतीजानि ॥ सोकरकेतकनामबखानि ॥ पटलीग्रासविवर्ननुहोइ ॥ सैतीसमिलैंतौछियेनकोइ ॥ सुक्षचीकनौंतेजसरूप ॥ ताहिअवासिकैपहिरैंभूप ॥ रोगदोषसवतनकेहरै ॥ धनजनअन्नवृद्धिबहुकरै ॥ सुतदारापशुबाढैधाम ॥ अरुपुजवैसवमनकेकाम ॥ औरबहुतफलवरनौंकीते ॥ कर्कैतकधारनमैजीते ॥ भलेभलेमैभलौजुआइ ॥ पुष्पराग केमोलविकाइ ॥ ॥ इतिकर्कैतकमणिपरीक्षा

अथ मासरमणिपरिक्षा ।

गिरौकरेजौअसुरको, बढौवज्रकीधार ॥ उत्तरदेस मलेछथल, उपजेमानिमासार ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ कारेलालपीतसितहरे ॥ औरचित्रितनानारँगभरे ॥ तामेएकजुकारोसोइ ॥ दरशकरेजाकेरंगहोइ ॥ छेवासेसबअंगदिखाइ ॥ तनीचेमासरमानिआइ ॥ अभ्रकत्रासपटलविनुजोइ ॥ ताकौधरतासियानेलोइ ॥ पानीदूधइकट्ठौकरो । तामेंडारिमासरमणिधरौ ॥ जोमासरमणिमासरशुद्ध । करैसुन्यारौपानीदूध ॥ जेउपजेदुश्मनतैदोष । तत्क्षणतिनकोकरईमोष ॥ भूतादिनाईतेउद्धरैं । जलबूडैनअगिनिमेंजरैं ॥ गुणपावैतासोंकरमोल साधारनज्योंमिलैसुवोलु ॥ योमासरमणिकोंपरिवानु ॥ भाषाजिगरीइमनीजानु ॥

इतिश्रीरत्नसागरेमासरमणिपरीक्षावर्णनं नामदशमस्तरंग ॥ १० ॥

दोहा ॥ उत्तरदेशतुषारथल, बलवीरजको

पाइ ॥ उपजेभीषममणितहां,अतिपवित्रमानि
खाइ ॥ चौपाई ॥ ताकेरंगसुभावहिगु
नों। अरुपहिरेकेगुणजेसुनो ॥ बादरशरदअकास
हिशेतु। जैसो शंखकुमुदकोहेतु ॥ श्वेतकांचअरुब
ज्रप्रभाउ। कासोरूपोशशिकोभाउ ॥ सोमणिश्री
स्थिरज्ञानवीनाम । करैसुमनकेपूरकाम ॥ कंठपरे
वाकेरँगजोइ। श्वेतबिंदकारिसंयुतसोइ ॥ स्त्रीके
कुलउपजैआनि । हरैसुमणिवहुविषकीखानि ॥
वारिपखारिताहिजोपीवै । महाविषनतेप्राणी
जीवै ॥ मृगकीआंखिसमानजुहोइ । प्रभाप्रचंड
जांनिवीसोइ ॥ श्वेताविंदजेसंयुतहोई ॥ सकल
अंगतेजस्वीसोई ॥ औरबिंदवहुरंगानिधरै। दारुण
विषकोनाशनकरै ॥ कछूनीलतालीनेहोइ। कछु
कअंगविद्युतद्युतिसोइ ॥ कछुकलाललोचनकी
भांति । अरुसुव्रतवहुरेखापांति ॥ ताकोनामम
हामणिधरै ॥ बहुविधिवृद्धिनरनकीकरै ॥ नाशै

नाहिंताकीसबबात । सोससमादसुभगहैगात ॥ अपगुणहरैगुणनअधिकारी । तातेलगैपदुमिपरप्यारी ॥ दोहा ॥ नानारत्नसमानदुति, बहुरेखागनधर्न । शुद्धविंदगनजगतमणि, नागतंद्रविषहर्न ॥ तुरतलाभकंचनकरै, हरैदुखनकीआपु ॥ कहैविदीहीनाममणि, लहैपुण्यनपरतापु ॥ मंत्रानितनमनम्याइकै, धनकैंगोनिटकाइ ॥ तामणिकीइहिभांतिहै, करैपरिक्षाआइ ॥ प्रथमगुप्तियहमणिहतो, व्यंजननागजगैन ॥ तुमपूंछीतिहितेकही, गिरिजापंकजनैन ॥

इति विजनानाममणि ॥

तातेसोनेकैसोरंग ॥ लीलीरेखविराजैअंग ॥ रेखाश्वेतपीतअरुलाल । कारीरेखासहितविशाल ॥ इतनेचिह्नजासुमेंवाम । नीलकंठमणिताकोनाम ॥ विपुलभोगकीदातासोइ । अरुज्ञातासतमारगहोइ ॥ करैकवित्तजियैबहुकाल । यामेंसं

शयकछूनवाल ॥ ताराकैसीआभाअंग ॥ अरुकछु लगैसुवरनकेरंग ॥ श्वेतबिंदुअरुकारीरेख ॥ लगै बिलावआंखिअवरेख ॥ औरैकाजबातनाहिंसरै । केवलधनकोलाभैकरै ॥ रक्तवरणपारदकीभांति । इंद्रनीलमणिकैसीकांति ॥ श्वेतरेखकारिसंयुत सोइ । अर्थकाजमणिआवैसोइ ॥ विश्वनामम णिवाकीखानि ॥ सकलस्वार्थफलनिकीदानि ॥ शुद्धफटिकसोदेखैजोइ । लीलीरेखाभूषितसोइ ॥ शुद्धसूत्रतैअधिककछुतनौ ॥ सोप्रसिद्धवानित सुतगनौ ॥ पांचवरणजोलीलारंग । ताहिग रकोजानैरंग ॥ सेंदुररंगअंगहैजासु । कारीरे खापरमप्रकासु ॥ ऐसोरूपहोइमणिजोइ । वि षकोमैलनशावैसोइ ॥ कांसेकैसेरंगजोहोइ । ना नारेखाव्यापितसोइ ॥ नानाबिंदुजासुमेंहोइ ॥ नानाज्वरकोनाशैसोइ ॥ पीरेवरणजुमणिकोहेतु ॥ दोइरेखअरुबिंदुसुपेतु ॥ जाहिपुरानीबिछीखाइ ॥

धोइपिवावतविषजुनशाइ ॥ पीतश्वेतमणिरेखाअंग।
इंद्रनीलकैसीद्युतिअंग ॥ नेत्रशूलअरुरोगअपार।
धोइपियैतैंजांइअसार ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
हरितवरनजोहोयमणि, रेषापीतसुपेत ॥ धोइपि
यैनाशैतुरत, महागरलकेहेत ॥ चौपाई ॥
पीरेगौंहूंकेरंगसे ॥ गजलोचनकीआकृतिकसै ॥
श्वेतबिंबकरिसंयुतहोई ॥ सर्वअजीरननाशैसोई
करतअंगअरुरेखासुद्ध ॥ आंषैंकृष्णवरनम
निवृद्ध ॥ करतसूलअयलोचनसूलु ॥ इनरो
गनिकोनासैमूलु ॥ जोमणिशुद्धफटिककीकांति ॥
कछरातीकछूपीरीभांति ॥ सोवीछीकेविषकोहरै ॥
अरुपूरनमनकामनाकरै ॥ आधीकारीआधीला
ल ॥ किंचितसेतसुतैसोलाल ॥ ऐसोरूपहोइम
निजोइ ॥ धोइपियैविषुनासैंसोइ ॥ रातीरेषाराते
रंग ॥ अरुआवर्त्तशोभासुभअंग ॥ गरुननाम
तामणितासौंकरै ॥ सर्पादिककेविषकोहरै ॥ पिय

रेअंगजुपियरीरेषा ॥ अरुरातीरेषाजुविसेषा ॥ औरैरूपलसैमणिजोइ ॥ सबहीव्याधिविनाशैसोइ ॥ पीरेअंगजुरेखाश्याम ॥ नानाबिंदसहितअभिराम ॥ ऐसेरूपहिजोमणिधरै ॥ महासर्पविषुताकोहरै ॥ फूलकुम्हेंडेकेरंगअंग ॥ नानाविंदाविराजेसंग ॥ सर्पव्याधिअरुसबाविषशूल ॥ करैसुमणिनिहचैनिर्मूल ॥ रक्तवर्णआभामनिहोइ ॥ नानाविंदसंजयुतसोइ ॥ तेजस्वीबहुरूपनिधान ॥ सर्पविषनकोहरै प्रमान ॥ चंदनआभाकांतिजुऐन ॥ कृष्णबिंदभूषितजगगैन ॥ सर्वरोगविनासैसोइ ॥ जोऐसीमनिपावैकोइ ॥ रंगआवरीफुलकैजोइ ॥ कृष्णबिंदुतैंसंयुतहोइ ॥ वहमणिपुत्रलाभकोकरै ॥ धोप्यावैअरुअंगहुधरै ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ दाडिमफूलसुरंगकृष्णविंदआभूषिता ॥ उज्ज्वलरेखाअंग,सौभाग्यवदाहिनी ॥ दोहा ॥ ॥ कुंदफूलसमतुल्यजो, वातलसुवनसुढार ॥ ॥ ऐसोइपुनिमणिधरै, हरैजुविषकीझार ॥

॥ सोरठा ॥ ॥ गजलोचनकेरूप, प्रभाविडा लाआंखिकी ॥ गरुरसेतसमरूप,पूजनोयमणि सोसदा॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नानाचित्रमयूराजि मि, कछुकफटिककैहोइ ॥ सोमणिरागुकहावई, म नवंछितफलहोइ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सुवापां खसमजोइ । श्वेतविंदभूषितसदा ॥ हरैविघ्नसब सोइ, सुनिगंजनशंकरकहैं ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उज्ज्वलपारदकेरंगजोइ॥ रेखाश्वेतविभूषितसोइ ॥ पाइजिवावैमणिस्वाछंद ॥ तामेंकछूनउपजैदंद ॥ सवैवरनकेरंगनधरै ॥ नानारेखविभूषितकरै ॥ चिह्नअनेकरूपतनसनै ॥ सोमणिनायकजानौंम नै ॥ सोऔतारगरुडकोजानि॥ हरैसुसर्पविषानिकी खानि ॥ श्वेतवरनसबउदरउदार ॥ पीठिसुकृष्ण वरनाविस्तार ॥ नागवरनमणिजानौवहै ॥ विष कीमहाविषमताहरै ॥ दोहा ॥ इतनोंमैंतुमसों कहो, मणिनमहातमजोइ ॥ विनशास्त्रनाहिंजानई सुरमुनिमानसुकोइ ॥

॥ सोरठा ॥ ॥ गजलोचनकेरूप, प्रभाविडा लाआंखिकी ॥ गरुरसेतसमरूप,पूजनोयमणि सोसदा ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नानाचित्रमयूराजि मि, कछुकफटिककैहोइ ॥ सोमणिरागुकहावई, म नवंछितफलहोइ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ सुवापां खसमजोइ । श्वेतविंदभूषितसदा ॥ हरैविघ्नसब सोइ, सुनिगंजनशंकरकहैं ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ उज्ज्वलपारदकेरंगजोइ ॥ रेखाश्वेतविभूषितसोइ ॥ पाइजिवावैमणिस्वाछंद ॥ तामेंकछूनउपजैदंद ॥ सवैवरनकेरंगनधरै ॥ नानारेखविभूषितकरै ॥ चिह्नअनेकरूपतनसनै ॥ सोमणिनायकजानौम नै ॥ सोऔतारगरुडकोजानि ॥ हरैसुसर्पविषनिकी खानि ॥ श्वेतवरनसबउदरउदार ॥ पीठिसुकृष्ण वरनविस्तार ॥ नागवरनमणिजानौवहै ॥ विष कीमहाविषमताहरै ॥ दोहा ॥ इतनोमैंतुमसों कहो, मणिनमहातमजोइ ॥ विनशास्त्रनहिंजानई सुरमुनिमानसुकोइ ॥

अथ नवग्रहकेरत्न देवता॥

॥ चौपाई ॥ सूरजपदमरागकौगनौं ॥ चंदरूपमुक्ताफलभनौं ॥ पुष्परंगमणिगुरुजानिवी ॥ वीजेंभार्गवमणिमानिवी ॥ मरकतमणिकोबुधगनिचित्त ॥ इंद्रनीलसुनिगुनिमुनिमित्त ॥ गौमेदकमणिजानौराइ ॥ वैदूर्यमणिकेतसुभाइ ॥ मूंगाकोमंगलकैंजानि ॥ नौग्रहहरनदेवतावानि ॥ जाग्रहकोघरुजिहिदिशिहोइ ॥ तहँतहँरतनप्रकाशितसोइ ॥ विजयसवैया ॥ थापना ॥ भानुकेसमानरूपमाणिकमँझारलालशुक्रकेसमानवज्रपूरबलगाइये ॥ सोमकेसमानअग्निमुक्ति काप्रकासितहैंमंगलकोमूंगादिसिदक्षिनिलगाईये ॥ नैरितिगौमेदहूकौंरमकारिलावोजहांपर्वतपछांहनीलासनिसुषदाइये ॥ वाइववैदूर्जकेतपुष्पगुरुउत्तरदेसमरकतईसानबुद्धनौगृहलिगाइये ॥चौपाई॥ हीरामानिकमोतीपंना ॥ पांचोइंद्रनीलमनिगं

ना ॥ महारतनएपांचौंजानि ॥ औरसम
निकीपंचवषानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुष्पराग
वैडूर्जमनि,लहसानियांगोमेद ॥ अरुप्रवालमनिपं
चमौं,एसमानानिजुभेद ॥ कर्कैतुकमासारमनि,र
जवर्तुकाजान ॥ फटिकसहितमधमांगनौंअरु
भीषमपाषांन ॥ औरौरतनअनेकहैं,असुरदेहसं
जात ॥ कछूकहेलषिग्रंथमाति,गुरयदासअवदात॥

॥ इति श्रीरत्नसागरसंपूर्णः ॥

पुस्तकमिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.

जाहिरात।

१ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण सटीक।

पं० ज्वालाप्रसादकृतटीका

लीजिये रामायण सटीकभी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईजीकी लिपिके अनुसार व संपूर्ण क्षेपकों सहित जिसमें शंका समाधान अद्यापर्य्यंत विस्तार पूर्वक लिखेहैं इसके टीकाकी रचना बहोत उत्तम और अपूर्व मनभावन सुख उपजावन राम यश पावन है, की०८रु०ड०म०२रु०

२ रामायण बडा।

सहित श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंकासमाधान और तुलसीदासजीका जीवन चरित, रामवनवास तिथिपत्र रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड माहात्म्य और बरवारामायणके जिसमें पंचीकरणका बडा नकशा और १८००कठिन २ शब्दोंके अर्थ लिखेहैं की० ५ रु० रफ ४ रु०

३ रामायण मझोला।

ऊपरके सब अलंकारों सहित इसका सांचा छोटा है अक्षर सामान्यहै कीमत २॥ रु० रफ१॥

४ रामायण गुटका।

यहभी पूर्वोक्त सब अलंकारोंसे पूरितहै साधु तथा देशाटनकरनेवालोंको अत्यंत उपयोगी है कीमत १ रु० है

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास
श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना मुंबई.